पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 1.11.2013 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

251 कुण्डीय यज्ञ

की तैयारी हेतु

आर्य कार्यकर्त्ता बैठक

रविवार 10 नवम्बर 2013
सायं 3.30 बजे
स्थान- आर्य समाज, दिलशाद गार्डन, पूर्वी दिल्ली
-यशोवीर आर्य, संयोजक

वर्ष-30 अंक-11 कार्तिक-2070 दयानन्दाब्द 190 1 नवम्बर से 15 नवम्बर 2013 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 1.11.2013, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य समाज सन्देश विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव सौल्लास सम्पन्न

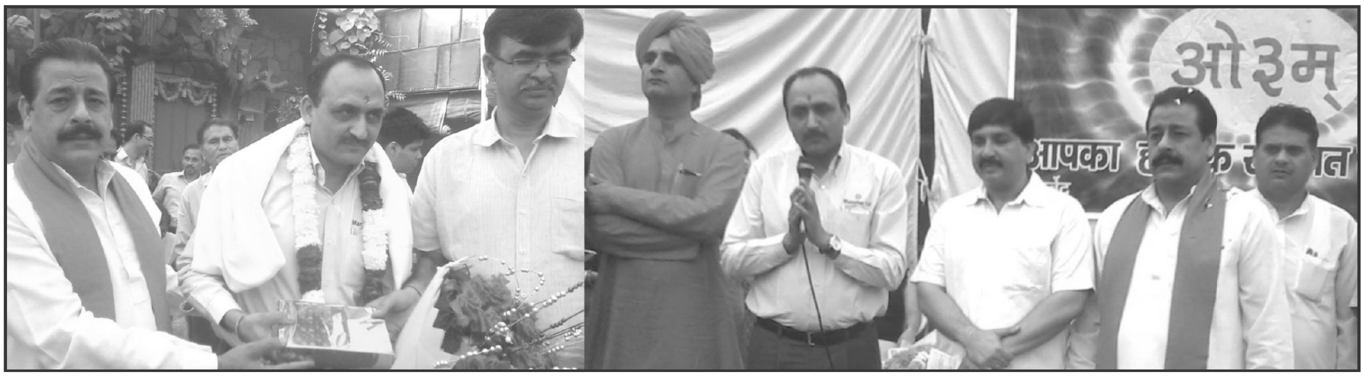

रविवार, 27 अक्तुबर 2013, आर्य समाज सन्देश विहार, दिल्ली का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। उपरोक्त चित्र में श्री प्रभात शेखर (मनोहरलाल ज्वैलर्स) का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, श्री विजेन्द्र आनन्द। द्वितीय चित्र में श्री प्रभात शेखर उद्‌बोधन देते हुए साथ में डा.अनिल आर्य, दुर्गेश आर्य, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी (कुरूक्षेत्र), पं.ज्ञान चन्द जी। श्री रमेश अग्रवाल का प्रवचन हुआ व श्रीमती कविता रानी के भजन हुये। प्रधान श्री शशिभूषण मल्होत्रा ने आभार व्यक्त किया व श्री दुर्गेश आर्य ने कुशल मंच संचालन किया। श्री साहिबसिंह शास्त्री ने यज्ञ करवाया।

आर्य समाज पंचदीप व रेलवे रोड़ रानी बाग का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

रविवार, 27 अक्तूबर 2013, आर्य समाज पंचदीप, पीतमपुरा, दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। पं.विजय भूषण आर्य के मधुर भजन व आचार्य सत्यदेव वेदालंकार के प्रवचन हुए। डा.अनिल आर्य का उद्‌बोधन हुआ। प्रधान श्री आनन्द प्रकाश गुप्ता ने संचालन किया। द्वितीय चित्र में आर्य समाज रेलवे रोड, रानी बाग, दिल्ली में डा.अनिल आर्य उद्‌बोधन देते हुए, आचार्य सत्यवीर शर्मा, आचार्या सुमेधा जी, श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्री राजीव आर्य ने विचार रखे। प्रधान श्री राजकुमार शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

योग निकेतन पंजाबी बाग व तपोवन आश्रम देहरादून का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 27 अक्तूबर 2013, स्वामी योगेश्वरानन्द जी की तपोस्थली 'योग निकेतन' पंजाबी बाग,दिल्ली का उत्सव प्रधान स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। डा.महेश विद्यालंकार, आचार्या ललिता जी के प्रवचन हुए। श्री रामेश्वर गोयल, मंत्री ने संचालन किया। श्री बृजमोहनलाल मुन्जाल, डा.अनिल आर्य, श्री रवि चड्ढा, श्री जगदीश नागिया, श्री सत्यानन्द आर्य आदि उपस्थित रहे। श्री विपिन रहेजा, श्रीमती सुदेश आर्या के भजन हुए। द्वितीय चित्र में वैदिक साधन आश्रम, देहरादून के उत्सव में स्वामी दिव्यानन्द जी प्रवचन करते हुए। आचार्य ब्रह्मजीत जी का उद्‌बोधन हुआ ।श्री दर्शन अग्निहोत्री, प्रधान ने आभार व्यक्त किया व मंत्री श्री प्रेमप्रकाश आर्य ने संचालन किया।

श्रद्धांजली- दयानंद के एक कर्मठ सिपाही को

-विनोद कालरा

मृत्यु जीवन का अंतिम सत्य है। संसार में आवागमन के चक्र का पहिया धरती पर प्राणी मात्र के प्रादुर्भाव से निरंतर घूमता चला आ रहा है। यदि जन्म और मरण ईश्वर की न्याय-व्यवस्था के अंतर्गत घटित होने वाला एक अटल सत्य है तो यह भी एक सच है कि जो भी प्राणी धरा पर आता है उसे इस संसार की कर्मभूमि पर कर्म मार्ग स्वयं बनाते हुए चलना पड़ता है। लेकिन इनमें से कितने व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो चलते हुए अपने सदकर्मो के अमिट निशान पीछे छोड जाते है। कम बहुत ही कम। और ऐसे बहुत कम व्यक्तितत्वों में एक नाम है - स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद कालरा।

एक ऐसा व्यक्तित्व जिसका सम्पूर्ण जीवन पूर्णतया आर्य समाज को अर्पित और समर्पित रहा। वह दिखने में साधारण लेकिन सेवा भाव में एक असाधारण व्यक्तित्व थे। 1 नवम्बर, 1938 को विभाजन पूर्व पाकिस्तान के जिला मुजफ्फरगढ़ में जन्मे श्री दुर्गा प्रसाद कालरा जी का जन्म एक आर्य समाजी परिवार में हुआ। उनके पिता स्वर्गीय श्री धर्मदेव कालरा और श्रीमती शोभा देवी नित्यप्रति यज्ञ, संध्या करने वाले महर्षि दयानंद के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले दंपत्ति थे। वे विभाजन के पश्चात दिल्ली के बाग कड़े खां और बाद में उसके समीप सराय रोहिल्ला इलाके में बस गए। सराय रोहिल्ला क्षेत्र में आर्य समाज के निर्माण में श्री दुर्गा प्रसाद कालरा के पिताजी का खासा योगदान रहा। दुर्गा प्रसाद जी ने युवावस्था से ही नियमित रूप से आर्य समाज जाने का ऐसा नियम बनाया जो अखिरकार उनकी सांसो के साथ ही छूटा, जिंदगी उसे न तोड़ पाई। कहने की आवश्यकता नहीं कि दुर्गा प्रसाद जी को आर्य समाज के मूल्य और संस्कार विरासत में ही मिले। लेकिन विशेषता किसी अमूल्य धरोहर के मिलने में नहीं बल्कि उसको संजोने और उसके निरंतर विस्तार में हैं। और स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद जी का आगामी जीवन इसी विस्तार का प्रतिरूप रहा।

अपने माता-पिता से मिले वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत दुर्गा प्रसाद जी सन 1984 में बाहरी दिल्ली के प्रशान्त विहार इलाके में आकर बस गए। तब इस इलाके में सब कुछ था, बस नहीं था तो किसी आर्य समाज का प्रांगण। दुर्गा प्रसाद जी को इस बात की कमी सबसे अधिक खलती थी। लेकिन इस कमी को पूरा करने के लिए उन्हें आर्य समाज को समर्पित अपने जैसे कुछ व्यक्तित्वों की आवश्यकता थी। ईश्वर कृपा से दुर्गा प्रसाद जी को अपना मनोरथ पूरा करने के लिए अपने जैसे साथी भी मिल गए। उन्हें श्री विश्मबरदयाल गुप्ता, श्री हंस राज डूडेजा, श्री धर्मपाल परमार, श्री यशपाल ठाकुर, श्री राधेश्याम गुप्ता और ऐसे ही कुछ और साथियों का सहयोग मिला जिनके साथ मिलकर वह प्रशान्त विहार में आर्य समाज का निर्माण करने का स्वप्न साकार करने में जुट गए। शुरूआत घर-घर जाकर हवन करने से हुई। मुझे भली-भांति याद है कि कैसे वह रविवार को कभी रिक्शे पर तो कभी स्कूटर पर और कोई साधन न मिले तो पैदल ही हाथ में हवन कुंड, आचमन पात्र, आसन, संविधा आदि यज्ञ का सामान लिए अपने घर से प्रातः निकल पड़ते थे। ऐसे पवित्र कार्य के लिए कभी उन्हें अपेक्षित सहयोग मिल जाता तो वह उस व्यक्ति का धन्यवाद कर देते, नहीं मिलता तो यज्ञोपरांत प्रभु का धन्यवाद कर देते। लेकिन शिकवा किसी से नहीं। उन्होंने सनातनी परंपरा में विश्वास रखने वाले घरों में भी यज्ञ आयोजित करवा कर उन्हें आर्य समाज से जोड़ने का प्रयत्न किया और ऐसे बहुत से प्रयत्न कालांतर में सफल भी हुए। ऐसे कुछ परिवार आज भी दुर्गा प्रसाद जी के प्रेरणा से आर्य समाज से जुड़े हैं।

ढाई-तीन वर्षो तक यह क्रम चलता रहा। घर हवन की पवित्र अग्नि से और वेद की ऋचाओं से सुवासित होते रहे। इस बीच आर्य समाज के लिए ज़मीन हासिल करने का उपक्रम भी चलता रहा। दिल्ली जैसे शहर में रियायती कीमतों पर सरकार से जमीन मांगना किसी भी धार्मिक संस्था के लिए हिमालय की चढ. ाई से कम उद्यम न था। कभी खाली प्लॉट के लिए आवेदन ''नं'' के बेरहम उत्तर के साथ लौट आता तो कभी आवेदन के साथ सहायक दस्तावेज़ों की मांग की जाती। जब वो दस्तावेज भेज दिए जाते तो पता चलता कि सैकड़ों सरकारी फाईलों के नीचे दबा आवेदन महीनों से सरकारी काम के सरकने का इंतज़ार कर रहा है। लेकिन आखिरकार वो दिन भी आ गया जब डीडीए ने प्रशान्त विहार में आर्यसमाज के भवन के लिए प्लॉट आवंटित कर दिया। लेकिन उसके साथ शर्त यह थी कि एक निश्चित तिथि तक अधिग्रहण के लिए पैसा जमा कराना अत्यंत आवयश्क था। यहां समस्या यह थी कि आबादी कम होने के कारण ज़मीन के लिए समर्थवान दानदाता बहुत कम थे। दुर्गा प्रसाद जी और उनके सहयोगियों के अथक प्रयासों के बावजूद भी प्लॉट की पूरी राशि नहीं जुट पाई। अंततः इसका हल यह निकाला गया कि समाज के आठ-दस प्रमुख सदस्यों ने अपनी ओर से सामर्थ्य से अधिक धनराशि की आहुति इस यज्ञ में डाली जिसके प्रेरणास्रोत दुर्गा प्रसाद जी रहे। सन 1988 में प्लॉट का पोजेशन मिल गया। उसके बाद उस पर भवन का निर्माण आरंभ हुआ जिसके लिए दुर्गा प्रसाद जी निरंतर ऐसी संस्थाओं और व्यक्तियों के संपर्क में रहे जिनसे इस पुनीत कार्य के लिए सहयोग मिल सकता था। वह स्वयं कभी व्यक्तिगत रूप से तो कभी पत्र-व्यवहार द्वारा यथासंभव दान का निवेदन करते। मुझे अच्छी तरह याद है कि उस दौरान वो न जाने कितन पत्र मेरे कार्यालय के निकट आईटीओ के मुख्य डाकघर से पोस्ट करने के लिए मुझे देते। निर्माण कार्य के दौरान वह पूरे मनोयोग से इसमें जुटे रहे। भवन की नींव रखने से लेकर उसके लोकार्पण तक के प्रत्येक कार्य को उन्होंने तनमयता से किया और कराया। और यह सारे प्रयास एक दिन रंग लाए। वर्तमान में दो सत्संगों भवनों, एक अत्यंत सुंदर यज्ञशाला और कई कमरों से सुसज्जित आर्य समाज प्रशान्त विहार एक सुन्दर परिसर के रूप में विद्यमान है।

यह स्वप्न पूरा हो जाने के बाद दुर्गा प्रसाद जी उसी तीव्रता से आर्य समाज की सेवा में जुट गए जैसी तीव्रता घृत की आहूति से अग्नि में प्रकट होती है। चाहे आर्य समाज में होली मंगल मिलन का कार्यक्रम हो या जन्माष्टमी पर्व हो या नवरात्र के अवसर पर विशेष यज्ञ हो या फिर सप्ताह भर चलने वाला आर्य समाज का वार्षिकोत्सव, ऐसे सभी कार्यक्रमों की वह मनोयोग से व्यवस्था और संचालन करते। 1988 से लेकर 2012 तक के 24 वर्ष लम्बे समय में वह आर्य समाज प्रशान्त विहार के ऐसे सभी कार्यक्रमों का अभिन्न हिस्सा रहे। उनका समर्पण भाव इतना गहरा था कि मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी अपने किसी साथी के साथ उनके मतभेद रहे हो, उनको लेकर शिकायत का भाव या रोष रहा हो। वह बढ़े तो सभी को साथ लेकर, चले तो हमकदम बन कर और साया बने तो छाया बन कर। उनके बारे में एक और बात रेखांकित करने योग्य है कि उपरोक्त अवधि में भले ही वह समाज में किसी पद पर रहे हो या नहीं लेकिन ऐसे उत्सवों का हिस्सा बनने और एक उन्हें संवारने में उनका निरंतर योगदान रहा।

दुर्गा प्रसाद जी की कर्मठता और मनोयोग से मुझे एक बात याद आती है। बात 2002 की है, आर्य समाज प्रशान्त विहार के वार्षिकोत्सव में लोगों को आमंत्रित करने के लिए वह मंत्री की हैसियत से लिफाफों पर पते लिख रहे थे। उसी समय आमंत्रितों की सूची में मेरी निगाह नौ-दस ऐसे व्यक्तियों के नामों पर पड़ी जो सनातनी परंपरा में आस्था रखते थे और जिन्हें हर साल आमंत्रित तो किया जाता था, लेकिन वह आर्य समाज के उत्सवों में कभी नहीं आए। मैंने जब यह बात उनके सामने रखते हुए कहा कि ''यह लोग आते नहीं है तो आप इन्हें आमंत्रित क्यों करते हैं।'' इस पर दुर्गा प्रसाद जी का उत्तर था ''इन लोगो के माता-पिता या पूर्वजों में से कोई आर्य समाज से जुड़ा हुआ था। लेकिन ये वैदिक संस्कारों को भूल गए। मैं इनको आमंत्रित नहीं कर रहा बल्कि इनको इनके वैदिक संस्कारों की याद दिला रहा हूं। इनमें से दो-तीन भी फिर से आर्य समाज से जुड़ गए तो मैं समझूंगा मेरा याद दिलाना काम आ गया। और तू देखना ऐसा ही होगा।'' और ऐसा हुआ भी, आज उनमें से तीन-चार परिवार नियमित रूप से आर्य समाज प्रशान्त विहार से जुड़े है। ऐसे कितने ही लोगों को उन्होंने आर्यसमाज के साथ जोड़ कर 'इदं न मम' को जीवन में सार्थक किया।

दुर्गा प्रसाद जी के सेवा कार्य केवल अपनी आर्य समाज के प्रांगण तक ही सीमित नहीं रहे। समय के साथ-साथ यह सेवा भाव विस्तारित होता गया। इस विस्तार का परिणाम था उत्तरी पश्चिमी वेदप्रचार मंडल। जिसकी स्थापना उन्होंने स्वर्गीय श्री भजन प्रकाश आर्य जी के साथ मिलकर की। इस मंडल में उत्तरी पश्चिमी दिल्ली की लगभग 11 आर्य समाजों को उन्होंने मंडल का अंग बनाया और वेद प्रचार के कार्यो को आर्य समाज की चारदीवारी से निकाल कर आगे बढ़ाया। वह कई वर्षो तक मंडल में विभिन्न पदों पर रहे और भजन प्रकाश जी तथा अन्य साथियों के साथ मिलकर वेदों के प्रचार के लिए खूब काम किया। इसके साथ-साथ रोहिणी और पीतमपुरा की सभी आर्य समाजों के साथ जुडें रहे और उनके उत्सवों इत्यादि में नियमित तौर पर भाग लेकर संगठन को निरंतर सुदृढ. करते रहे। आर्य समाज के प्रतिष्ठिन विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी के साथ भी उनका लम्बा साथ रहा। उनके पहले जम्मू स्थित और बाद में हरिद्वार स्थित आश्रम में प्रत्येक वर्ष होने वाले योग-साधना शिविरों में वह अवश्य अपने दल-बल के साथ पहुंचते और निःस्वार्थ अपनी सेवाएं देते। इसीलिए आचार्य अखिलेश्वर जी का उनके साथ विशेष स्नेह रहा। युवा शक्ति को आर्य समाज के साथ जोड़ने का महत्ती कार्य भी उनके सेवा कार्यो का अंग रहा। वह आर्य समाज के राष्ट्रीय संगठन आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी को सहयोग देकर सदैव इस कार्य में तत्पर रहे। आर्य युवक परिषद के समय-समय पर होने वाले प्रचार कार्यक्रमों और आंदोलनों में वह अपने समाज के अधिकतम सदस्यों के साथ उपस्थित रहते थे।

श्री दुर्गा प्रसाद कालरा जी 2010 में कुछ रोगग्रस्त हो गए। यह रोग धीरे-धीरे उनके शरीर को क्षीण करता रहा लेकिन वैदिक संस्कारों और आर्य समाज के प्रति उनके सेवा भाव और कर्मठता को क्षीण न कर सका। शरीर काफी कमजोर हो जाने क बावजूद वह अंतिम दिनों तक समाज जाते रहे। उन्होंने अपना जीवन महर्षि का गुणगान करते हुए खुशीपूर्वक जीया। भरपूर जीवन जीने की इससे बड़ी मिसाल क्या हो सकती है कि वह निधन से करीब दो वर्ष पूर्व एक दिन अपनी बड़ी फोटो फ्रेम करवा कर घर ले आए। घर के कुछ सदस्य जब उनसे इस बात को लेकर नाराज़ हुए तो उनका उत्तर था ''नाराज़ मत हो, एक न एक दिन तो यह काम आनी ही है। उस वक्त तुम यह काम करोगे, मैंने कर दिया तो क्या ?'' और वो दिन 8 अक्तूबर 2013 की शक्ल में हमारे सामने आया।

आज, आर्य समाज प्रशान्त विहार के सत्संग भवन का वह स्थान शून्य नज़र आता है जहां दुर्गा प्रसाद जी बैठा करते थे, मानों प्रश्न कर रहा हो कि ''कहां है वो देव काया जो उस स्थान को सुशोभित करती थी? '' नहीं हैं, आज दुर्गा प्रसाद जी देह रूप में हमारे बीच नहीं है। लेकिन उनके सेवा कार्य, कर्मठता और समर्पण सदैव महर्षि देव दयानंद का सच्चा अनुयायी बनने के लिए हमें सदैव प्रेरित करता रहेगा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 35 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में
युवा विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज के ब्रह्मत्व में आर्य नेता डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

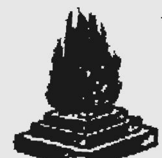

आशीर्वाद : स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्ममुनि जी

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 24, 25, 26 जनवरी 2014 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान : रामलीला मैदान, पी.यू.ब्लाक, पीतम पुरा, दिल्ली-34 (निकट कोहाट एन्कलेव मैट्रो स्टेशन)

विराट् शोभा यात्रा, शुक्रवार 24 जनवरी, 2014, प्रातः 10.30 बजे

शुभारम्भ : रामलीला मैदान, पी.यू.ब्लाक, पीतम पुरा, दिल्ली से प्रारंभ होगी

मुख्य आकर्षण

आर्य महिला सम्मेलन ● राष्ट्रीय वेद सम्मेलन ● शिक्षा-संस्कृति निर्माण सम्मेलन
संगीत संध्या ● व्यायाम प्रदर्शन ● राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था

1. बाहर से आने वाले आर्य बन्धु व आर्य युवक अपने पधारने की व संख्या के बारे में 31 दिसम्बर 2013 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु, आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 31 दिसम्बर 2013 तक फोन न०. 9891142673, 9868664800, 9871581398, 9999995017 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्यसमाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत), **नई दिल्ली**

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007 दूरभाष : 9810117464, 9013137070, 9868064422, 9958889970

दीपावली यूँ मनाएँ

आओ मिलकर दीप जलाएँ, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।
अपने घर का दीप जलाकर, सबके घर का दीप जलाऐं।।
दूर करें अंधियारा सारा, जगमग जग होवे उजियारा।
सकल विश्व को आर्य बनाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।
लेकर मन में खुशियां सारे, युवा वृद्ध सब बच्चे वारे।
नाचें गाऐं झूम मचाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।
खेलें ऐसे खेल निराले, जिससे हों उज्ज्वल मन काले,
जुआ ताश पर रोक लगाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।
बम पटाखे कभी न फोड़ें, बुरी आदतें सारी छोड़ें,
मिलकर सबको गले लगाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।
व्यर्थ न फेंकें रूपए पैसे, देवें जिसके पास न पैसे,
सेवा कर दुःख दर्द मिटाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।
गौ सेवा कर वृद्धि करें हम, उन्नति और समृद्धि करें हम,
गौ हत्या पर रोक लगाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।
याद करें ये सूत्र निराले, पीकर ओ३म् नाम के प्याले
ऋषि दयानन्द निर्वाण मानाऐं, दीप जलाऐं दीप जलाऐं।

विमलेश बंसल 'आर्या', 329, द्वितीय तल, संत नगर, पूर्वी कैलाश-65

गीत - निराला ऋषि

गुजरात की धरा से इक सूर्य जगमगाया,

उसकी बराबरी का दूजा नजर न आया।
वेदों की ओर लौटो ऋषिवर का था यह नारा।
भटके जो दर बदर थे उन्हें मिल गया किनारा।
ज्योति दिखा के उसने तम से हमें बचाया।

लाखों की सम्पति को ठुकरा दिया पल में
एक बात थी बताई राणा को उस महल में
जिसको तू कहता मेरी तेरी नहीं से माया

दीनों अनाथों का बनकर हबीब आया
सदियों से जो अलग थे उनको करीब लाया
मार्ग बता के सच्चा जीने का ढंग सिखाया

बेदर्द इस जहां ने क्या क्या न सितम ढाये
एहसान अनगिनत हैं 'सत्यम' गिने न जाये
खुद जहर पी गया वो अमृत हमें पिलाया।

-आचार्य सतीश सत्यम,
फोन:9811164828.

हजारीबाग में लाल बहादुर शास्त्री को याद किया गया

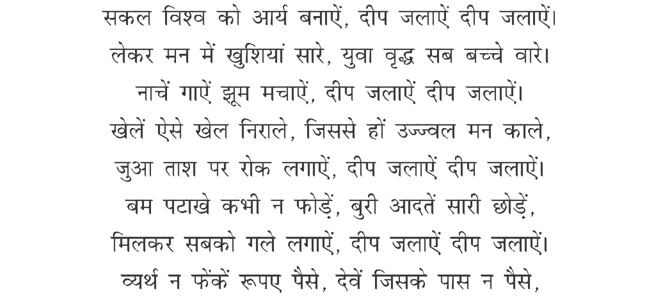

बुधवार, 2 अक्तूबर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् झारखण्ड व आर्य कन्या गुरूकुल के तत्वावधान में पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का स्मरण किया गया। पूर्व सांसद श्री महावीर लाल विश्वकर्मा, ओमप्रकाश जयसवाल, डा.नवेन्दु,उमेश आर्य, रवि कुमार, संजय तिवारी, अभिजीत सिन्हा, डा.नवीन आर्य ने विचार रखे व आचार्या पुष्पा शास्त्री ने संचालन किया।

आर्य समाजों के आगामी उत्सव

1. आर्य समाज,गोबिन्दपुरम,गाजियाबाद का 14 वां वार्षिकोत्सव 8 से 10 नवम्बर 2013 तक आयोजित किया जा रहा है ।आचार्य शिव कुमार शास्त्री(सहारनपुर) के प्रवचन व आचार्य सतीश सत्यम के मधुर भजन होंगे।
2. आर्य समाज,जवाहर नगर,पलवल का 58 वां वार्षिकोत्सव 6 नवम्बर से 10 नवम्बर 2013 तक मनाया जा रहा है । स्वामी श्रद्धानन्द जी यज्ञ के ब्रह्मा रहेंगे।
3. आर्य समाज,अरूण विहार,सैक्टर-29,नोएडा का वार्षिक उत्सव रविवार, 17 नवम्बर 2013 को प्रात:8 बजे से दोपहर 1 बजे तक डा.अनिल आर्य की अध्यक्षता में मनाया जायेगा व डा.अशोक कुमार चौहान मुख्य अतिथि होंगे।

251 कुण्डीय यज्ञ व आर्य महासम्मेलन की तैयारी के लिये कार्यकर्ता बैठक सम्पन्न

रविवार, 20 अक्तुबर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 24, 25, 26 जनवरी 2014 को पीतमपुरा में होने वाले आर्य महासम्मेलन की तैयारी के लिये विशाल आर्य कार्यकर्ता बैठक आर्य समाज विशाखा एनक्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली में प्रधान श्री रणसिंह राणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। चित्र में पार्षद श्री ताराचन्द बसंल का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, श्री कृष्ण चन्द पाहुजा, श्री रामकुमार सिंह आदि। श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री ओमप्रकाश गुप्ता, श्री दुर्गेश आर्य, श्री धर्मपाल आर्य, श्री मनोहरलाल चावला, डा.वीरपाल विद्यालंकार, श्री प्रवीन आर्य, श्री यशोवीर आर्य, श्री नरेन्द्र सुमन आदि ने सम्मेलन को सफल बनाने की अपील की।

आर्य समाज, सैक्टर-13, करनाल व आर्य समाज, सैक्टर-7, चण्डीगढ़ का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, सैक्टर-13, करनाल का उत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, डा.नरेन्द्र आहूजा विवेक, स्वामी सच्चिदानन्द जी के प्रवचन हुए। द्वितीय चित्र में आर्य समाज, सैक्टर-7. बी, चण्डीगढ़ के उत्सव में आचार्या प्रियवंदा प्रवचन करते हुए। डा.सोमदेव शास्त्री, आचार्य देवव्रत, ढा.जगदीश शास्त्री, ए. एल.बाहरी, रविन्द्र तलवार, वी.पी.पाल, प.रविन्द्र आर्य के उद्बोधन हुए।

कोटपुतली में आर्य महासम्मेलन व सफदरजंग एनक्लेव में गीता कथा सम्पन्न

कोटपुतली, राजस्थान में जिला आर्य महासम्मेलन सौल्लास सम्पन्न हुआ, परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रामकृष्ण शास्त्री के नेतृत्व में युवको ने उत्साह के साथ भाग लिया व व्यायाम प्रदर्शन का प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत किया। द्वितीय चित्र में आर्य समाज, सफदरजंग एनक्लेव, दिल्ली के तत्वावधान में आचार्य अखिलेश्वर जी की गीता कथा का आयोजन किया गया। श्रीमती सुदेश आर्या के भजन हुए। शुद्ध होकर वापिस आये श्री यशोवर्धन आर्य का स्वागत किया गया। डा.अनिल आर्य, श्री राजीव रंजन, श्री रविदेव गुप्ता, श्री राजीव चौधरी ने भी अपने विचार रखे।

सरस्वती विहार में गायत्री यज्ञ व मुजफ्फरनगर हिंसा के विरूद्ध धरना सम्पन्न

रविवार, 20 अक्तूबर 2013, आर्य समाज, सरस्वती विहार, दिल्ली के तत्वावधान में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुआ। डा. अनिल आर्य, श्री ओमप्रकाश मनचन्दा, श्री नन्दकिशोर गुप्ता, श्री अरूण आर्य ने उद्बोधन दिया। द्वितीय चित्र में अखिल भारतीय जाट सभा के तत्वावधान में श्री मूलचन्द दहिया की अध्यक्षता में मुजफ्फरनगर हिंसा के विरूद्ध, नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर विशाल धरने का आयोजन किया गया। श्री यशपाल मलिक, डा.अनिल आर्य आदि ने हिन्दुओं के साथ न्याय करने की मांग मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव से की।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970